(6) लोककला

- वह कलाए जो गैर व्यवसायिक होती है एवं आमलोगो के जीवन से सम्बन्धित होती है, लोककला है।

★ मेहंदी ⇒

- सोजत व मालवा की मेहंदी प्रसिद्द है।
- R.J के मारवाड क्षेत्र में मेहंदी अत्याधिक लोकप्रीय है।
- विवाह के दिन मेहंदी → कैरी, सिंघाडा, स्वास्तिक, तोरण

★ पान्ने ⇒ प्रसिद्द → (1) सांगानेर (2) नाथद्वारा

- कागज पर देवी - देवताओं के चित्रों का अंकन पान्ना है।
- सर्वाधिक कलात्मक पान्ना (एवं श्रृंगार) → श्रीनाथजी (16 श्रृंगार + 24 कलाएं)

- रक्षाबंधन पर श्रवण कुमार, विवाह पर गणेश जी एवं दीपावली पर लक्ष्मी जी का पान्ना पुजा जाता है।
- Asia की सबसे बडी पेपर प्रिंट मिल - सांगानेर
- कुमरप्पा राष्ट्रीय हस्तशिल्प (कागज) संस्थान, सांगानेर

Launchidea.in

★ सांझी ⇒

- श्राद पक्ष में भाद्रपद पुर्णीमा से प्रारम्भ होकर आश्विन मास में 15 दिन तक साझी बनाई जाती है।

- अविवाहित कन्याओ की कला जो अच्छे वर की कामना हेतु की जाती है।

- समर्पित – पार्वती

- लोकप्रिय – मेवाड़ व हाडौती

- साझी के दौरान दिवारो पर गोबर का लेप कर 15 दिन तक निम्न लिखित माण्डने बनाए जाते हैं →

1st Day → सुर्य, चन्द्रमा, तारे

2nd Day → 5 फुल

3rd Day → पंखी

4th Day → हाथी की सवारी

5th Day → चौपड़

6th Day → स्वास्तिक

7th Day → घेवर

8th Day → छ्टवाड़ी, ढोलक, नगाड़े, ढोल

9th Day → बान्दरवाल

10th Day → खजुर वृक्ष

11th to 15th Day → पशु, पक्षी, मानव, देवता के बड़े चित्र जिसे सांझाय / सांझ्या कोट कहते है।

सांझी के प्रकार →

(1) गोबर की सांझी , हाड़ौती

(2) केले के पत्तों की सांझी , नाथद्वारा

(3) जल सांझी , उदयपुर

(4) रेत सांझी , जैसलमेर

- मछिन्द्रनाथ जी का मंदिर , उदयपुर → सांझी मंदिर

Q. कौनसी एक सांझी पार्वती को समर्पित नहीं है ?
→ जल सांझी , उदयपुर (भगवान कृष्ण को समर्पित)

★ कावड़ ⇒ बैरागियों का पुश्तैनी व्यवसाय

प्रसिद्ध → बस्सी , चित्तौड़गढ़

अन्य नाम → चलता फिरता मंदिर

- इसका प्रयोग श्रावण मास में ।

प्र. कलाकार - मांगी लाल मिस्त्री
सोहन लाल मिस्त्री

- लकड़ी से निर्मित खुले कपाट वाली मंदिर नुमा आकृति ।

★ बेवाण ⇒ बस्सी , चित्तौड़

अन्य नाम → देव विमान , मिनिऐचर वुडन टेम्पल

- इसका प्रयोग भाद्रपद मास में । जलझूलनी एकादशी के समय।

- लकड़ी से निर्मित खुले कपाट वाली मंदिर नुमा आकृति जिसके अन्दर देवी - देवताओं की मुर्तिया स्थापित होती हैं।

- कावड व बेवाण का अन्दरूनी रंग लाल होता है।

Q. राजस्थानी लोक कला में बेवाण क्या है?

(a) कपड़े पर देवी-देवताओं की चित्रकारी।

(b) कागज के पान्ने पर देवताओं के चित्र बनाने की कला।

(c) लकड़ी से निर्मित सिंहासन जिस पर ठाकुर जी की मुर्ति को श्रृंगारित कर विराजमान किया जाता है। ✓

(d) लकड़ी से निर्मित खुले कपाट वाली मंदिरनुमा आकृति

★ चौपड़ा ⇒ प्रसिद्ध – बस्सी, चित्तौड़
बाड़मेर

- लकड़ी से निर्मित उपकरण जिसमें मांगलिक वस्तुए जैसें चावल, कुमकुम, मोली व गुड etc. रखे जाते हैं।

★ कठपुतली ⇒ इस कला का उद्भव जयगढ़ दुर्ग, जयपुर से हुआ वर्तमान में उदयपुर का प्रसिद्ध।

★ तोरण ⇒ बस्सी, चित्तौड़
बाड़मेर

- लकड़ी से निर्मित एक आकृति जिसके मध्य में सुवा/तोता एवं मयुर अंकित होता है।
- विवाह के अवसर पर तोरण मारना विजय का प्रतीक माना जाता है।

★ गोडलिया ⇒ पशु के शरीर पर दागे गए निशान

★ अटेरना ⇒ पशुओं के शरीर पर निशान दागना (क्रिया)

★ गोदना ⇒ मानव चर्म पर चित्रकारी का कार्य

★ बटेवडे ⇒ थेपड़ी व छाणो को सुरक्षित रखने हेतु गोबर से निर्मित विशेष प्रकार की कलाकृति।

★ बील ⇒ यह जैसलमेर क्षेत्र की एक प्रसिद्ध कला है।

- बांस की लकड़ी को धागो से बांधकर घोडे की लीद वाली मिट्टी मिलाकर बील का निर्माण होता है।
- बील को सजाने हेतु खिड़कीयां, लघु दरवाजे, काँच लगाए जाते है।
- इसका उपयोग घरेलु वस्तुए रखने हेतु करवाई जाती है।

★ माण्डणा ⇒

अन्य नाम - रंगोली / सातिया

प्रमुख माण्डने -

(1) मोरनी माण्डणा → विवाह के अवसर पर मीणा जाति में प्रचलित

(2) भराड़ी → विवाह के अवसर पर भील जनजाति में चावल के आटे व कुमकुम से निर्मित माण्डना।

- भराड़ी भीलों में विवाह की देवी होती है।

(3) ताम → साधारण जातियों में विवाह के अवसर पर।

- धापाताम - दुल्हन की विदाई के समय वधु पक्ष की ओर से बना माण्डना।

(4) पुष्कर पेडी / पचवारी → जब कोई तीर्थयात्रा कर सकुशल घर लौट आता है।

(5) चौकड़ी → होली के अवसर पर बनाया जाने वाला मुख्य माण्डना

(6) पगल्या
(7) स्वास्तिक चिन्ह } मांगलिक अवसर पर

Q. राजस्थानी लोक कला माण्डना के सम्बन्ध में कौनसा कथन सही नहीं है?

(a) सरल व जटिल दोनो प्रकार की रेखाओं का प्रयोग
(b) यथार्थवादी अलंकरण की कमी।
(c) मानव आकृतियों की अधिकता ✓
(d) माण्डने नारी विशेष की मन: स्थिति के प्रतीक

व्याख्या → RJ में प्रचलित माण्डणा कला में मानव आकृतियों की कमी तथा ज्यामितीय आकृतियों की अधिकता है।

★ फड़ ⇒

– यह संस्कृत भाषा का एक शब्द है।

मुख्य केन्द्र – शाहपुरा

जनक – पांचोजी जोशी (मुख्यतः – छीपा जाति)

प्र. चित्रकार – श्रीलाल जोशी

विजय जोशी → महात्मा गाँधी व covid-19 पर फड़

कल्याणमल जोशी

अभिषेक जोशी

प्रदीप मुखर्जी → रामचरितमानस पर आधारित 108 लघु चित्रों की फड बनाई

पार्वती जोशी → प्रथम महिला फड चित्रकार

गौतल ~~जोश~~ देवी

अनुष्का जोशी

Defination → यह कपड़े की एक कलमकारी कला है। कपड़े पर साधु, देवी-देवता, असुर, महापुरुष एवं महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रों सहित वर्णन करना।

– फड़ निर्माण में सुती। रेजी कपड़ा काम में आता है जिसका रंग समायोजन निम्न प्रकार से है →

- देवी → नीला
- देवता → लाल
- असुर → काला
- साधु → पीला / सफेद
- शौर्य व विरता → सिन्दुरी व लाल

- चौमासा / चतुर्मास अवधि में फड वाचन का कार्य नहीं होता है।

- भोपा → फड वाचन करने वाला व्यक्ति।

  └ फड वाचन महिला व पुरुष दोनों करते हैं।

फड ठण्डी करना → फड. जीर्णशीर्ण होने पर पवित्र सरोवर में विसर्जन करना।

वाद्ययंत्र → रावणहत्था / जंतर

- RJ में प्रचलित मुख्य फड. ⇒

(1) देवनारायण जी की फड. ⇒ सबसे लम्बी
सबसे छोटी
सर्वाधिक ~~चि~~ चित्रांकन

- फड. पर घोड़े का चित्र
वाद्ययंत्र - जंतर
वाचन - गुर्जर जाति का भोपा व भोपी (अविवाहित)
2 Sep. 1992 - फड. पर 5 ₹ का डाक टिकट

(2) पाबूजी की फड. ⇒

- सर्वाधिक लोकप्रिय
- सर्वाधिक चौड़ी
- वाचन - नायक जाति का भोपा ← युद्ध दृश्य के चित्र मुख्य
- अवसर - (1) ऊंट बिमार होने पर
  (2) मन्नत पुरी होने पर
- वाद्ययंत्र - रावणहत्था

(3) रामदेवजी की फड़ ⇒

- वाचन - कामड़ जाति के भोपे द्वारा
- वाद्ययंत्र - रावण हत्था
- इस फड़ का सर्वप्रथम चित्रण चौथमल चितेरे ने किया।

(4) रामदला व कृष्णदला की फड़ ⇒

- इस फड़ का सर्वप्रथम चित्रण धुलजी चितेरे किया।
- वाचन - भाट जाति का भोपा
- एकमात्र फड़ जो दिन में पढ़ी जाती है।
- वाद्ययंत्र का प्रयोग नहीं।

(5) भैंसासुर की फड़ ⇒

- एकमात्र फड़ जिसका वाचन नहीं केवल दर्शन होते हैं।
- यह फड़ हाड़ौती क्षेत्र में बावरी समुदाय के लोगों में लोकप्रिय।

(6) अमिताभ बच्चन की फड़ ⇒

- इस फड़ का वाचन न्युयॉर्क, अमेरिका में रामलाल व पतासी देवी द्वारा किया गया।

Q. राजस्थान की कौनसी एक लोक कला पर गायन, नाट्य, चित्रकला एवं मौखिक साहित्य का अनुठा संगम प्रदर्शित होता है?

(a) फड. ✓
(b) सांझी
(c) कठपुतली
(d) बेवाण

Q. राजस्थान की किस फड़ पर लोकगायन, धर्म, चित्रकला एवं मौखिक साहित्य का संगम है?

→ देवनारायण जी की फड.

Q. कौनसी फड़ पर सम्पुर्ण जगत का लेखा-जोखा वर्णित है?

→ रामदला - कृष्णदला की फड.

★ कोठियाँ / गौर / कोठे ⇒ ग्रामिण आँचल में मिट्टी व गोबर से निर्मित विशाल बर्तन जिसमें अनाज सुरक्षित रखा जाता है।

★ पावटी ⇒ उदयपुर के ग्रामीण आँचल में पैरों से चलने के लिए लकड़ी की रेंहट।

★ गेड़ ⇒ उदयपुर क्षेत्र में प्रचलित पानी निकासी का एक बर्तन जो सुराईनुमा आकृती में होता है।

Launchideain